पंजीकरण सं. आर.एन. 40596/83 डाक पंजी. संख्या-जी-3-डी.एल. (एन.)/084/24-26 प्रकाशित 01.02.2024 इस अंक का मूल्य 2 रूपये

॥ ओ३म् ॥

युवा उद्घोष

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् (पंजीकृत) का पाक्षिक शंखनाद

Join—http://www.facebook.com/groups/aryayouth/

कार्यालय : आर्य समाज कबीर बस्ती, दिल्ली-*110007*, चलभाष : 9810117464, 9868051444

दानदाताओं से अपील

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के कार्य व गतिविधियों में सहयोग करने हेतु खाता संख्या 10205148690 स्टेट बैंक आफ इण्डिया, घन्टाघर, दिल्ली–110007, आई. एफ. एस.कोड - SBIN0001280 पर सीधे भेज कर हमें फोन न. 9868051444 पर एस.एम.एस कर दें या 9810117464 पर Paytm कर दें। – अनिल आर्य

वर्ष-40 अंक-17 माघ-2080 दयानन्दाब्द 200 01 फरवरी से 15 फरवरी 2024 (प्रथम अंक) कुल पृष्ठ 4 वार्षिक शुल्क 48 रु.

प्रकाशित: 01.02.2024, E-mail : yuva.udghosh1982@gmail.com aryayouthgroup@yahoogroups.com Website : www.aryayuvakparishad.com

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के 46 वें वार्षिकोत्सव पर

त्रिदिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महावेबिनार सम्पन्न

वेदों का प्रकाश पूरे विश्व को देना है – डॉ. अशोक कुमार चौहान (संस्थापक अध्यक्ष एमिटी शिक्षण संस्थान)

पाखंड अन्धविश्वास आज भी चुनौती है– स्वामी आर्य वेश

विदेशों में भारतीय संस्कृति के प्रति अधिक जागरूकता – भुवनेश खोसला (प्रधान, अमेरिका आर्य समाज)

रविवार 28 जनवरी 2024, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के 46 वें वार्षिकोत्सव पर त्रिदिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महावेबिनार का ऑनलाइन आयोजन किया गया जिसमें 8 देशों अमेरिका, बांग्लादेश, मॉरिशस, दुबई, ऑस्ट्रेलिया, अफ्रीका, नेपाल आदि के प्रतिनिधि जुड़े। कार्यक्रम का शुभारंभ आचार्य अखिलेशवर जी (हरिद्वार) ने यज्ञ के साथ किया।पिंकी आर्य, नताशा कुमार (बंगलौर),कमल मोगा नैरोबी आदि के भजन हुए। समारोह अध्यक्ष शिक्षाविद डॉ. अशोक कुमार चौहान ने कहा कि आज पूरा विश्व ज्ञान का प्यासा है उन्हें वेदों का ज्ञान आर्य समाज को देना है।आर्य युवक परिषद युवा निर्माण व संस्कार देने का कार्य कर रही हैं जो सराहनीय है। अमेरिका आर्य समाज के प्रधान भुवनेश खोसला ने कहा कि विदेशों में भारतीय संस्कृति के प्रति अत्यन्त आस्था है और सभी पर्व उत्साह पूर्ण मनाए जाते हैं। आर्य संन्यासी स्वामी आर्य वेश ने कहा कि बढ़ता हुआ पाखंड अंध विश्वास आज भी चुनौती है जिस का उत्तर आर्य जनों को देना है। ऑस्ट्रेलिया के काउंसलर सुरेन्द्र चहल ने कहा कि हमे विदेश मे रहकर अपनी बोली बोलने में गर्व होता है। बांग्लादेश से अमित आर्य ने कहा कि यहां यज्ञ,वैदिक प्रचार का कार्य सुचारू चल रहा है हमे भारत से वैदिक साहित्य के सहयोग की आवश्यकता है। नैरोबी आर्य समाज के प्रधान डा. राज कुमार सैनी ने भी कहा कि वैदिक प्रचार के लिए भारत से अच्छे विद्वान भेजे जाएं। परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कुशल संचालन किया। इस अवसर पर आर्य महिला सम्मेलन,आर्य युवा शक्ति सम्मेलन,आर्य प्रवासी सम्मेलन, दयानन्द जयंती व भावी कार्यक्रम आदि सम्मेलन आयोजित किए गए।आचार्य महेन्द्र भाई,प्रवीण आर्य ने धन्यवाद ज्ञापन किया। प्रमुख रूप से वैदिक विद्वान डॉ. जयेन्द्र आचार्य,आचार्य विष्णु मित्र वेदार्थी,आर्य रविदेव गुप्ता,प्रेम हंस ऑस्ट्रेलिया,हरिओम शास्त्री, आचार्य विमलेश बंसल, दर्शनाचार्य ,दीप्ति सपरा,यशोवीर आर्य, कमाण्डर धर्मवीर, दुर्गेश आर्य, आर्यवती मॉरिशस, विमल चड्ढा नैरोबी, राजेन्द्र बेदी अमेरिका, ओम सपरा, कृष्ण कुमार यादव, डॉ. रचना चावला, प्रो. करुणा चांदना,श्रुति सेतिया आदि ने अपने विचार रखे। आर्य नेता राजेश मेहन्दीरत्ता, अमरनाथ बत्रा, सुरेश आर्य, आनन्द सिंह आर्य, स्वतंत्र कुकरेजा, आनन्द प्रकाश आर्य, वेद प्रकाश आर्य, कुसुम भण्डारी, विमला आहूजा,कपिल बब्बर, योगेन्द्र शास्त्री, रोहित सिंह आदि उपस्थित थे।

श्रीराम मंदिर के लिए आर्य समाज में हुआ शुभकामना यज्ञ

श्री राम जी के आदर्शों को जीवन में धारण करें –राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य

रविवार 21 जनवरी 2024, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद की और से मुख्यालय आर्य समाज कबीर बस्ती, पुरानी सब्जी मंडी, दिल्ली में श्रीराम मंदिर निर्माण पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए शुभकामना यज्ञ किया गया और इस अवसर को एतिहासिक बताते हुए हार्दिक बधाई दी। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कहा कि आज का दिन इतिहास में स्वर्ण अक्षरों में लिखा जाएगा, यह प्रत्येक हिन्दू के लिए गौरव व स्वाभिमान का दिन है।उन्होंने कहा कि श्री राम मंदिर संदेश देता है कि हम मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम के आदर्शों को जीवन में धारण करें।श्री राम का जीवन भ्राता प्रेम,कर्तव्य पालन,पितृ आज्ञा,आदर्श राजा,आदर्श मित्र और अन्याय दमन का उदहारण है। वैदिक विद्वान आचार्य महेन्द्र भाई ने राष्ट्र कल्याण की भावना के साथ यज्ञ करवाया। राष्ट्रीय मंत्री प्रवीण आर्य ने मधुर भजन सुनाते हुए अपनी शुभकामनायें प्रदान की। प्रमुख रूप से यशोवीर आर्य, रामकुमार आर्य,नेत्र पाल आर्य, धर्मपाल आर्य, योगेन्द्र शास्त्री, गौरव झा, सुनील खुराना, अवधेश प्रताप सिंह, अशोक जांगड़, सुदेश भगत आदि उपस्थित थे।

पिछले पांच हजार वर्षों में दयानन्द के समान ऋषि नहीं हुआ

❑ मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून

महाभारत का युद्ध पांच हजार वर्ष से कुछ वर्ष पहले हुआ था। महाभारत युद्ध के बाद भारत ज्ञान–विज्ञान सहित देश की अखण्डता व स्थिरता की दृष्टि से पतन को प्राप्त होता रहा। महाभारत काल के कुछ ही समय बाद ऋषि जैमिनी पर आकर देश से ऋषि परम्परा समाप्त हो गई थी। ऋषि परम्परा का आरम्भ सृष्टि के आरम्भ से ही हुआ था। सृष्टि के आरम्भ में परमात्मा ने जिन चार पवित्र आत्माओं को वेदों का ज्ञान दिया था वह चारों अग्नि, वायु, आदित्य और अंगिरा नाम वाले ऋषि थे। इन चार ऋषियों ने एक–एक वेद का ज्ञान ईश्वर से अपनी आत्माओं में प्रेरणा द्वारा प्राप्त कर जिन ब्रह्मा जी को ज्ञान दिया था वह भी ऋषि थे। ब्रह्मा व अग्नि ऋषि से आरम्भ ऋषि परम्परा महाभारत काल के बाद जैमिनी ऋषि पर समाप्त हो गई। जैमिनी जी के कुछ शिष्य अवश्य रहे होंगे परन्तु इतिहास में इनका नाम नहीं मिलता। जैमिनी ऋषि के पांच हजार वर्षों बाद ऋषि दयानन्द का आविर्भाव हुआ। ऋषि दयानन्द ने आरम्भ के वर्षों में किसी एक गुरु का शिष्यत्व प्राप्त कर ऋषित्व को प्राप्त नहीं किया अपितु आयु के 22वें वर्ष में गृहत्याग से लेकर सन् 1863 में प्रज्ञाचक्षु गुरु स्वामी विरजानन्द सरस्वती जी से अध्ययन समाप्त करने तक वह 17 वर्षों की अवधि तक निरन्तर ज्ञान की खोज व विद्या की प्राप्ति के कार्य में एक सच्चे जिज्ञासु के रूप में सचेष्ट रहे। वह देश के प्रमुख धार्मिक तीर्थ कहे जाने वाले स्थानों सहित हिमालय पर्वत के अनेक आश्रमों व वहां योगियों की खोज में गये और उन विद्वानों से जो व जितना ज्ञान प्राप्त हो सकता था, प्राप्त किया। उन्होंने योग के गुरुओं से योग भी सीखा था और इससे उन्हें 18 घंटो तक समाधि अवस्था में ईश्वर का ध्यान करते हुए आनन्द का भोग करने की दक्षता प्राप्त हुई थी। सन् 1860 से पूर्व गुरु विरजानन्द जी से मिलने तक उनमें अर्जित विद्या से और अधिक विद्या प्राप्ति की अभिलाषा थी जो मथुरा में ढाई वर्ष तक गुरु आचार्य स्वामी विरजानन्द सरस्वती जी से विद्या प्राप्त कर सन् 1863 में पूरी की। स्वामी विरजानन्द जी ने अपने शिष्य दयानन्द जी को देश वा संसार से अविद्या दूर करने की प्रेरणा की थी जिसका उन्होंने आदर्श रूप में पालन किया। ऋषि दयानन्द आदर्श ब्रह्मचारी थे। ब्रह्मचर्य विषयक सभी शास्त्रीय नियमों का भी उन्होंने पूरा पालन किया था। उनका पूर्ण ब्रह्मचर्ययुक्त जीवन ही मुख्य कारण था जिससे वह वेदज्ञान व योग समाधि द्वारा ऋषित्व को प्राप्त हो सके। ऋषि वेदमन्त्रों के यथार्थ अर्थों के द्रष्टा को कहते हैं। ऋषि दयानन्द ने न केवल वेदमन्त्रों के यथार्थ अर्थ ही किये हैं अपितु पूर्व के वेदभाष्यकारों यथा सायण एवं महीधर आदि के वेदभाष्यों की समालोचना कर उनमें त्रुटियों व उनके मिथ्यार्थों पर प्रकाश भी डाला है और उनकी सयुक्तिक तार्किक समालोचना की है। ऋषि दयानन्द के वेदों के अर्थ सही हैं इसके लिये उन्होंने अनेक प्रमाणों से युक्त वेदभाष्य किया है जो निरुक्त के प्रणेता महर्षि यास्क के निर्वचनों, नियम व सिद्धान्तों सहित वेदमन्त्रों के भाष्य के अनुकूल है। वेदमन्त्रों के जो अर्थ ऋषि दयानन्द ने किये हैं वह बुद्धि एवं तर्क संगत हैं तथा ज्ञान व विज्ञान की कसौटी पर भी सत्य हैं। ऋषि दयानन्द के वेदभाष्य का अवलोकन करने पर ज्ञात होता है कि सृष्टि के आरम्भ में अमैथुनी सृष्टि में हमारे ऋषियों व उसके बाद के लोगों के विचार, मान्यतायें व सिद्धान्त क्या थे व क्या रहे होंगे? सृष्टि के आदिकाल का वह समय वस्तुतः मानव जाति के इतिहास का स्वर्णिम काल था जब आज की तरह का प्रदुषित वातावरण एवं सुविधायुक्त जीवन नहीं था। उस समय लोग कृषि से प्राप्त अन्न, वनस्पति, फल व गोदुग्धादि का शाकाहारी व शुद्ध भोजन करके अपने जीवन का निर्वाह करते थे। ईश्वर, जीवात्मा व सृष्टि के विषय में चर्चा करने के साथ ईश्वर के गुणों का चिन्तन, ध्यान व यज्ञ अग्निहोत्रादि करके वह अपने जीवन को व्यतीत करते थे। वेद का ज्ञान सर्वोत्कृष्ट है साथ ही इसकी भाषा भी सब भाषाओं में उत्तम है। कहा जाता है कि संस्कृत भाषा का ज्ञान प्राप्त करने पर अनन्त आनन्द की अनुभूति होती है। यह बात सर्वथा सत्य है। ऋषि दयानन्द जी के जीवन को देखकर इस तथ्य की पुष्टि होती है।

ऋषि दयानन्द सच्चे ब्रह्मचारी, योगी तथा वेदों के सर्वोत्कृष्ट ऋषि व विद्वान थे। उन्होंने मनुस्मृति में बताये गये धर्म के दस लक्षणों को धारण किया हुआ था। योग के पांच यम एवं पांच नियमों को भी उन्होंने धारण किया था। उनके जैसा महापुरुष व योगी इतिहास में दूसरा नहीं हुआ है। उनसे पूर्व के महापुरुषों में अविद्या को दूर करने का दृण संकल्प तथा वैदिक साहित्य का अध्ययन व धर्म प्रचार का कार्य अन्य किसी विद्वान ने नहीं किया जैसा कि ऋषि दयानन्द ने किया है। ऋषि दयानन्द ने ही आर्यों वा हिन्दुओं के आलस्य प्रमाद तथा विधर्मियों के छल, प्रलोभन एवं अन्य अशुभ इरादों व कार्यों से विलुप्त व नष्ट हो रही सनातन वैदिक धर्म व संस्कृति की रक्षा की। यदि वह न आते और वेदों का प्रचार न करते तो हम अनुमान से कह सकते हैं कि आज वैदिक धर्म व संस्कृति के दर्शन होने भी असम्भव नहीं तो कठिन अवश्य होते। ऋषि दयानन्द ने न केवल वैदिक धर्म और संस्कृति की रक्षा ही की है अपितु वेदों पर आधारित वैदिक धर्म को विश्व का सबसे श्रेष्ठ धर्म और संस्कृति भी सिद्ध किया है। सभी मत–पन्थ वा धर्मों का आधार ऐतिहासिक पुरुष व महापुरुष हैं जबकि वैदिक धर्म का प्रादुर्भाव ईश्वर व उसके यथार्थ स्वरूप के ज्ञाता व समाधि अवस्था में उसका साक्षात्कार करने वाले ऋषि हैं। ऋषि दयानन्द ने एक महत्वपूर्ण कार्य यह भी किया है कि उन्होंने वेद एवं सभी शास्त्रों के प्रमाणों से युक्त वैदिक धर्म के व्यापक स्वरूप पर सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका, संस्कारविधि, आर्याभिविनय, व्यवहारभानु, गोकरुणानिधि, पंचमहायज्ञविधि जैसे महत्वपूर्ण ग्रन्थ लिखे हैं। उनके लिखे सभी ग्रन्थ जन–जन की भाषा हिन्दी में है जिसे देवनागरी अक्षरों व हिन्दी भाषा का ज्ञान रखने वाला एक साधारण मनुष्य जान व समझ सकता है। वेदों के मन्त्रों के यथार्थ अर्थ करने की योग्यता रखने व जीवन के अन्तिम समय तक वेद प्रचार व वेदभाष्य आदि का कार्य करने के कारण वह सच्चे ऋषि, श्रेष्ठ महापुरुष व योगी थे।

ऋषि दयानन्द द्वारा संस्कृत व हिन्दी में वेदभाष्य करने सहित सत्यार्थप्रकाश एवं ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका जैसे महत्वपूर्ण ग्रन्थों की रचना करने से ही ऋषि सिद्ध हो जाते हैं। उन्होंने यह कार्य तो किया ही, इसके साथ ही उन्होंने समाज सुधार, देश की एकता व अखण्डता सहित देश की पराधीनता को दूर कर इसे आर्यों का स्वतन्त्र देश बनाने का स्वप्न भी देखा था। विदेशी अंग्रेज शासकों से पराधीन आर्यावर्त्त व स्वदेश भारत में वेदों का साहस एवं निर्भीकतापूर्वक प्रचार करना, अन्य मतों के अनुयायियों की शुद्धि कर वैदिक धर्म में सम्मिलित करना, देश की स्वतन्त्रता की बातें करना और स्वराज्य का मन्त्र देना उनकी भारत देश को विशेष देनें हैं। उनके यह कार्य इतिहास में अपूर्व व दुर्लभ हैं। ऋषि दयानन्द जी की हमें यह भी विशेषता प्रतीत होती है कि उन्होंने अपने व्यक्तित्व से स्वामी श्रद्धानन्द, पं. लेखराम, पं. गुरुदत्त विद्यार्थी, महात्मा हंसराज, स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती आदि अनेक उच्च कोटि के ईश्वर, वेद और देशभक्त दिये हैं। इन ऋषि दयानन्द के प्रमुख शिष्यों ने धर्म प्रचार सहित शिक्षा जगत, समाज सुधार एवं देश की स्वतन्त्रता सहित विधर्मियों के षडयन्त्रों को निर्मूल करने में भी बहुत महत्वपूर्ण योगदान दिया है। हम यह भी अनुभव करते हैं कि ऋषि दयानन्द ने शास्त्रीय वचनों के आधार पर सत्यार्थप्रकाश के नवम् समुल्लास में जिस मोक्ष वा मुक्ति का वर्णन किया है, उन्हें वह भी प्राप्त हुआ है। यदि उन्हें मोक्ष प्राप्त हुआ न मानें तो लगता है कि फिर मोक्ष प्राप्ति का अधिकारी महाभारत काल के बाद कोई भी व्यक्ति व महापुरुष नहीं हुआ और सम्भवतः भविष्य में भी नहीं होगा। इसका कारण यह है कि जिस वैदिक धर्म का पालन करने से मोक्ष प्राप्त होता है उसका ऋषि दयानन्द से उत्तम पालन वा आचरण कोई मनुष्य नहीं कर सकता है। ऋषि दयानन्द को यह श्रेय भी प्राप्त है कि उन्होंने देश व विश्व की जनता को सृष्टिकर्ता तथा जीवों के जन्म–मरण के आधार ईश्वर के सच्चे स्वरूप, गुण–कर्म–स्वभाव व उपासना की विधि प्रदान की और वायु को शुद्ध करने सहित रोगरहित, दीर्घायु से युक्त व सुखी जीवन के आधार अग्निहोत्र यज्ञ की विधि देकर सर्वत्र उसे प्रचलित किया। ऋषि दयानन्द का जन्मना जातिवाद समाप्त करने, फलित ज्योतिष को पराधीनता व पतन का कारण बताने सहित स्त्री व शूद्रों को वेदाध्ययन व उन्हें समाज में समानता का अधिकार दिलाने में भी सबसे अधिक योगदान है।

ऋषि दयानन्द ने आर्य साहित्य का निर्माण करने सहित वेदभाष्य का कार्य भी किया और वेद वचन 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' से हमें परिचित कराया। हमें गायत्री मन्त्र व इसका यथार्थ अर्थ भी उन्होंने बताया। कृण्वन्तो विश्वमार्यम् का अर्थ पूरे विश्व वा संसार को श्रेष्ठ गुणों से युक्त करना है जिससे संसार में कोई नास्तिक न हो, कोई अन्धविश्वासी न हो, कोई वेद विरुद्ध आचरण करने वाला न हो तथा कोई ऐसा न हो जो मातृ–पितृ–आचार्यों का आदर व सम्मान न करता हो। ऐसा भी कोई मनुष्य न हो जो मूक पशु–पक्षियों की हत्या कर व करवा कर उनके मांस का भक्षण करता हो, मद्यपान, धूम्रपान, अण्डों का सेवन करता हो तथा ब्रह्चर्यरहित जीवन व्यतीत करने वाला हो। ऋषि दयानन्द जी का हम व समस्त संसार जितना भी गुणगान करें उतना ही कम है। हम समझते हैं कि महाभारतकाल के बाद के पांच हजार वर्षों में ऋषि दयानन्द के समान वेदों के ज्ञान से प्रकाशमान व महापुरुषों के दिव्य गुणों से युक्त ऋषि व महर्षि उत्पन्न नहीं हुआ। ऐसे सर्वतो महान महर्षि देव दयानन्द को हम कोटिशः सादर नमन करते हैं।

–196 चुक्खूवाला–2, देहरादून–248001,फोनः09412985121

आर्य कुमार सभा वार्षिक बैठक सम्पन्न व विधानसभा अध्यक्ष का स्वागत

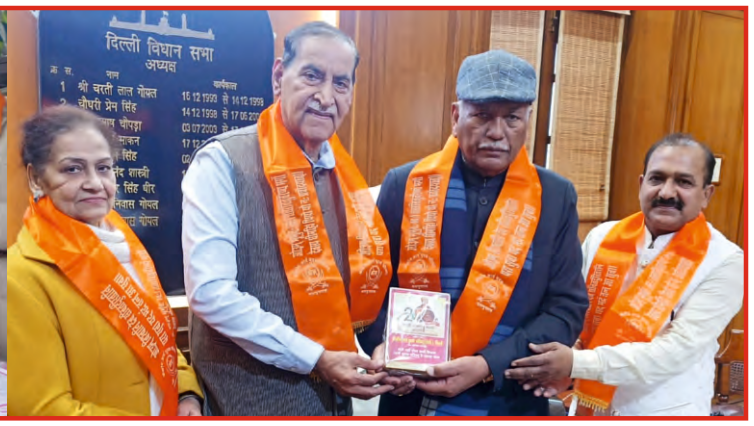

शुक्रवार 26 जनवरी 2024 को आर्य कुमार सभा विजय नगर दिल्ली की वार्षिक बैठक संपन्न हुई। अमेरिका से राजेन्द्र बेदी व विजय भाटिया का अभिनंदन करते हुए केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अनिल आर्य। ओम सपरा ने कुशल संचालन किया। द्वितीय चित्र मे दिल्ली विधानसभा अध्यक्ष श्री राम निवास गोयल को स्मृति चिन्ह भेंट करते राष्ट्रीय उपाध्यक्ष यशोवीर आर्य, साथ मे संजय आर्य।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् द्वारा कोरोना काल से 614वां वेबिनार सम्पन्न

स्वाभिमान के प्रतीक नेताजी सुभाष पर गोष्ठी सम्पन्न

संघर्ष और बलिदान के पर्याय थे नेता जी सुभाष –आचार्य चन्द्रशेखर शर्मा

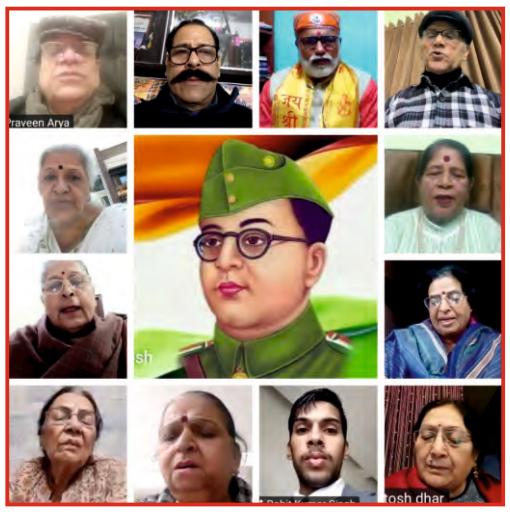

सोमवार 22 जनवरी 2024,केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के तत्वावधान में महान स्वतंत्रता सेनानी नेताजी सुभाष चंद्र बोस की 127 वी जयंती पर ऑनलाइन गोष्ठी का आयोजन किया गया।यह कोरोना काल से 606 वां वेबिनार था।उल्लेखनीय है कि आपका जन्म 23 जनवरी 1897 को कटक उड़ीसा में हुआ था। वैदिक विद्वान आचार्य चन्द्र शेखर शर्मा (ग्वालियर) ने कहा कि नेताजी सुभाष स्वतंत्रता संग्राम के महानायक थे,उनका स्वतंत्रता संग्राम में अमूल्य योगदान रहा। वह गर्म दल के नेता थे उनका मानना था कि अंग्रेज अहिंसा से नहीं जाएंगे अपितु इसके लिए सशस्त्र क्रांति आवश्यक है इसलिए उन्होंने आजाद हिंद फौज की स्थापना करके अंग्रेजी सता को खुली चुनौती दी।वह जातिवाद मुक्त समता मूलक समाज की स्थापना करने के हिमायती थे।राष्ट्र की वर्तमान परिस्थितियों में पूरे हिन्दू समाज को संगठित होना आवश्यक है तभी हम राष्ट्र की रक्षा कर पायेंगे देश में जहां जहां हिन्दू अल्प संख्यक हुआ वहां अलगाववाद वा आंतकवाद पनपा है। परिषद अध्यक्ष अनिल आर्य ने महर्षि दयानन्द जी की 200 वीं जयंती पर नयी योजनाए बनाने का आह्वान किया। राष्ट्रीय मंत्री प्रवीण आर्य ने समाज को जागृत करने का आह्वान किया। मुख्य अतिथि आर्य नेत्री विमल सचदेवा व अध्यक्ष विमला आहूजा ने अपने विचार व्यक्त किये। गायिका प्रवीना ठक्कर, कमला हंस, कौशल्या अरोड़ा, जनक अरोड़ा, विजय खुल्लर, संतोष धर आदि के मधुर भजन हुए।

200वीं महर्षि दयानन्द जयन्ती

5 मार्च 2024 को धूमधाम से मनाए –अनिल आर्य

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने समस्त आर्य समाजों/आर्य जनता से अपील की है कि आगामी **5 मार्च 2024** को **'दयानन्द दशमी'** पर्व आ रहा हैं, इस बार **200 वी जयंती** है तो सभी आर्य समाज दीप उत्सव मनाए, ओम ध्वज लगाए, विचार गोष्ठी, टीवी डिबेट, जगह जगह लंगर लगाए, साहित्य वितरण करे, लाइटिंग करें, विद्यालयों में प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाए। समाचार पत्रों में शुभकामनाओं के विज्ञापन दे, होर्डिंग्स बैनर लगा कर सारा वातावरण **'दयानन्द मय'** कर दे।

आशा है आप सभी मेरी अपील पर उत्साहपूर्ण कार्य करेगे।

ओ३म्

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद्
के तत्वावधान में
गुरूकुल कांगड़ी के संस्थापक, स्वतन्त्रता सेनानी, समाज सुधारक
168 वां स्वामी श्रद्धानन्द जन्मोत्सव
31 कुण्डीय राष्ट्र रक्षा यज्ञ
वीरवार, 22 फरवरी 2024, प्रात: 9:00 से 1:30 बजे तक
स्थान: गीता भारती स्कूल अशोक विहार, बी-1 ब्लाक, फेज-2, दिल्ली-52
मुख्य अतिथि : – स्वामी आर्य वेश जी (विश्व विख्यात आर्य सन्यासी)
ब्रह्मा : – श्रीमती विमलेश बंसल 'दर्शनाचार्या'
ध्वजारोहण :– ठाकुर विक्रम सिंह जी (संस्थापक अध्यक्ष राष्ट्र निर्माण पार्टी)
प्रवचन :– आचार्य अखिलेशवर जी महाराज
मधुर भजन :– श्री संजय व स्वर्णा सेतिया व श्रीमती प्रवीन आर्या 'पिंकी'
आमंत्रित अतिथि:- डॉ. हर्ष वर्धन जी (सांसद), राजेश गुप्ता (विधायक), डॉ. महेन्द्र नागपाल, योगेश वर्मा हरिशंकर गुप्ता (पूर्व विधायक), पूनम भारद्वाज, चित्रा विद्यार्थी (पार्षद), मंजु खंडेलवाल
अध्यक्षता:- श्री यशोवीर आर्य (राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद)
मुख्य यजमान:- सर्व श्री सुरेश आर्य, रोहित ढींगरा, डिम्पल भंडारी, तिलक चांदना, जीवन लाल आर्य

–गरिमामयी उपस्थिति–

डॉ. रिखब चन्द जैन, श्री सुशील बाली, श्री नेत्रपाल आर्य, श्री राकेश सखूजा, श्री संजीव आर्य, श्री समीर सहगल, श्री संजीव बजाज, श्री अविनाश चूघ, श्री वेदमित्र अग्रवाल
श्री संजीव सेठी, श्रीमती सीमा ढींगरा, श्री सुमेश सबरवाल, श्रीमती किरण सेठी, श्री के.के. सेठी, श्री सत्यपाल गांधी, श्री राकेश खुल्लर, श्री गोपाल आर्य, श्री अविनाश बंसल
श्री अभयदेव शास्त्री, श्रीमती अनीता ग्रोवर, श्री रूपेश जैन, श्री राकेश बेदी, श्री सुरेन्द्र पाल, श्रीमती ममता शर्मा, श्री कृष्ण चन्द आर्य, श्रीमती विजय हंस, श्री संतोष शास्त्री
आचार्य प्रेमपाल शास्त्री, श्री वीरेन्द्र आहूजा, श्री आदर्श आहूजा, श्री बृजमोहन गर्ग, श्री अमित मान, श्री कुंवरपाल शास्त्री, श्री गजेन्द्र आर्य, श्रीमती आशा भटनागर, श्री रवि चड्डा
श्री अरूण अग्रवाल, श्री अरुण बंसल, श्रीमती संतोष वर्मा, श्रीमती सत्यवती गुप्ता, श्री प्रवीन बत्रा, श्री नरेन्द्र अरोड़ा, श्री कस्तूरी लाल मक्कड़, श्रीमती सुषमा पाहुजा, श्री रामकुमार सिंह आर्य
डॉ. रचना चावला, श्री ओम सपरा, श्रीमती सोनिया संजू, श्रीमती राधा भारद्वाज, श्री अमर सिंह आर्य, श्रीमती शारदा कात्याल, श्रीमती मीना आर्य, श्रीमती कृष्णा पाहुजा, श्री अशोक सरदाना

ऋषि लंगर: दोपहर 1.30 से 2.30 तक,प्रबन्धक: विक्रांत चौधरी, विरेश आर्य,वरूण आर्य
यजमान बनने के लिए अपने नाम आरक्षित कर ले
आप सपरिवार सादर आमंत्रित हैं
निवेदक

अनिल आर्य, संयोजक, 9810117464
महेन्द्र भाई, सह-संयोजक, 9013137070
प्रेम सचदेवा, स्वागत अध्यक्ष, 9811122320
देवेन्द्र भगत, प्रवीन आर्य, प्रचार प्रमुख
धर्मपाल आर्य, कोषाध्यक्ष, 9871581398
दुर्गेश आर्य, वेदप्रकाश आर्य, राष्ट्रीय मंत्री, 9868664800, 9810487559
देवेन्द्र गोयल, प्रबंधक विद्यालय
राजरानी अग्रवाल, चेयरपर्सन
संगीता अस्थाना, हैड मिस्टर्स
गीता भारती स्कूल

श्रीराम मंदिर से राम राज्य की ओर पर गोष्ठी सम्पन्न

श्रीराम के राम राज्य के स्वप्न को साकार करें –आचार्य हरिओम शास्त्री

शुक्रवार 19 जनवरी 2024, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के तत्वावधान में श्रीराम मन्दिर से राम राज्य की ओर विषय पर ऑनलाइन गोष्ठी का आयोजन किया गया।यह कोरोना काल से 605 वां वेबिनार था। वैदिक विद्वान आचार्य हरिओम शास्त्री ने कहा कि 'राम' को भक्ति काल के निर्गुण और सगुण भक्तिधारा के संतों और कवियों ने राम के जीवन का विशद वर्णन किया है।निर्गुण भक्ति धारा के सन्त उन्हें निराकार ब्रह्म के रूप में कण कण में रमण करने/बसने वाले राम के रूप में 'मेरे तो रमते राम' के रूप में कीर्तन किया है। वहीं सगुण भक्तिधारा के सन्तों ने अयोध्या पति राजा दशरथ के पुत्र श्रीराम के रूप में कीर्तन किया है।सन्त तुलसीदास जी लिखते हैं कि –रामराज बैठे तिरलोका,हर्षित भये गये सब सोका। **सब नर करहिं परस्पर प्रीति, चलहिं स्वधर्म निरत श्रुति नीति।।दैहिक दैविक भौतिक तापा, रामराज्य मा कबहुं न ब्यापा। नहिं दरिद्र कोउ दुखी न दीना, नहिं कोउ अबुध न लच्छन हीना।।**

अर्थात् रामराज्य में यत्र तत्र सर्वत्र सब सुख और समृद्धि का ही साम्राज्य था।राम के जीवन का वर्णन करते हुए महाकवि मैथिलीशरण गुप्त जी ने लिखा है –राम तुम्हारा जीवन ही सुन्दर काव्य है।कोई भी कवि बन जाए यह सहज संभाव्य है।। दसवें सिख गुरु गोविन्द सिंह जी ने 'राम अवतार' में मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम जी के गुणों का वर्णन करते हुए 864 पदों की रचना की है जिसमें 425 पदों में केवल युद्धनीति का ही वर्णन किया है।अयोध्या साम्राज्य की स्थापना सतयुग में वैवस्वत मनु महाराज ने की थी।कलयुग में एक बार उज्जयिनी के राजा सम्राट विक्रमादित्य शिकार खेलते हुए अयोध्या आए।वहां उन्हें श्रीराम जी से सम्बंधित कुछ चीजें दिखाई पड़ीं।बाद में उन्होंने वहां एक विशाल मंदिर बनवाया जहां भगवान श्रीराम की पूजा अर्चना होती थी।बाद में सन् 1525 ई. में मुगल आक्रांता बाबर के आदेश से उसके सिपहसालार मीरबाकी ने राममंदिर को नष्ट कर दिया और उसकी जगह बाबरी मस्जिद के तीन गुंबद बनवाए। फिर भी उस गुंबद के बाहर एक राम चबूतरा बना कर उसपर श्री राम जी की पूजा अर्चना होती थी। फिर सन् 1949 ई. में मुख्य गुंबद के नीचे रामलला की मूर्ति स्थापित हुई और सन् 1989 ई. में श्री राजीव गांधी के कार्यकाल में वहां का ताला खुलवाया गया और पूजा अर्चना शुरू हो गई। सन् 1992 ई. में बाबरी ढांचे को ढहा दिया गया और वहीं पर टाट पट्टी का मन्दिर बनवाया गया जिसमें अभी तक पूजन कीर्तन हो रहा था।अब 22 जनवरी को विशाल मन्दिर में प्राण प्रतिष्ठा समारोह के साथ वहां समयोचित पूजन कीर्तन होना शुरू हो जाएगा।सभी आर्य हिन्दू प्रजा को चाहिए कि श्रीराम जी को अपने हृदय में बसा कर रामराज्य को साकार करें। मुख्य अतिथि आर्य नेता सत्यानंद आर्य व अध्यक्ष आर्य नेत्री विमला आहूजा ने श्रीराम जी के गुणों को जीवन में धारण करने का आह्वान किया। परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कुशल संचालन किया व राष्ट्रीय मंत्री प्रवीण आर्य ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

'भारतीय चेतना के संवाहक श्री राम' पर गोष्ठी सम्पन्न

श्रीराम ने सदैव मर्यादाओं का पालन किया –डॉ. राम चन्द्र (कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय)

सोमवार 15 जनवरी 2024, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के तत्वावधान में 'भारतीय चेतना के संवाहक श्रीराम' विषय पर ऑनलाइन गोष्ठी का आयोजन किया गया।यह कोरोना काल से 604 वां वेबिनार था। वैदिक विद्वान डॉ.राम चन्द्र (विभागाध्यक्ष,संस्कृत विभाग कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय) ने कहा कि भगवान श्रीराम भारतीय संस्कृति एवं चेतना के सर्वोच्च प्रतीक हैं।उनका जीवन, पारिवारिक,सामाजिक,प्रशासनिक एवं वैश्विक जीवन मूल्यों के सभी पक्षों में भारतीय चेतना के संवाहक के रूप में प्रकट होता है। उन्होंने अपने चारों भाइयों के साथ महर्षि वसिष्ठ से गुरुकुल में शस्त्र और शास्त्र विद्या की पढाई की।राज्याभिषेक के महान अवसर के विपरीत पिता के आदेश से धर्मचारिणी सीता एवं अनुज लक्ष्मण के साथ चौदह वर्ष के कठोर वनवास का वरण कर लिया।हिमालय जैसे संघर्षों के बीच भी सतत मर्यादा पालन ने उन्हें साधारण राजकुमार से कोटि–कोटि भारतीय के लिए आदर्श मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम बना दिया।डॉ.रामचन्द्र ने कहा कि राम केवल इसलिए आदर्श नहीं है कि वह स्वयं महान थे बल्कि उनका व्यक्तित्व इसलिए महान है कि उनके साथ में रहने वाला हर व्यक्ति भी राम की चेतना से चेतनावान हो जाता है। भरत का अतुलनीय भ्रातृप्रेम जिसमें वे 14 वर्ष तक खड़ाऊ को सिंहासन पर रख करके शासन करते हैं।वनवास तो राम को मिला है पर लक्ष्मण उनके साथ एक आत्मा बनकर अनुगमन करते हैं।जनकनंदिनी सीता भी राम के संघर्षों में सहगामिनी बन जाती हैं। इतिहास के पृष्ठों में ऐसा उदाहरण दूसरा प्राप्त नहीं होता। उन्होंने कहा कि राज्याभिषेक एवं वनवास के दो भिन्न–भिन्न अवसर पर भी राम के मुख मंडल पर समता का भाव था।बाली के पास रावण के वध की शक्ति थी पर राम ने यह कहते हुए उसका वध किया कि तुम वीर तो हो पर सदाचारी नहीं हो।रावण जैसे अतुलनीय शक्तिशाली पर उन्होंने सुग्रीव एवं हनुमान जैसे वनवासियों एवं अपने उच्चतम चरित्र से ही विजय प्राप्त कर ली। डॉ रामचन्द्र ने आह्वान किया कि राम मंदिर का निर्माण हमारी पीढियों की शाश्वत अस्मिता की पूर्ति का विजय घोष है इसलिए इस अवसर पर घर–घर में दीपावली का दृश्य होना चाहिए, दीप सजाने चाहिएं और साथ–साथ में श्रीराम के चरित्र को जीवन में अपनाने का संकल्प भी बनना चाहिए। मुख्य अतिथि आर्य नेता राजेश मेहंदीरता व आनंद प्रकाश आर्य ने भी श्री राम के आदर्शों को जीवन में धारण करने का आह्वान किया उन्होंने कहा कि आर्य समाज भले ही मूर्ति पूजा नहीं मानता परंतु सदियों की प्रतीक्षा के बाद बन रहे मंदिर के निर्माण पर हार्दिक प्रसन्नता व्यक्त करता है यह आने वाली पीढ़ियों को प्रकाश पुंज बनकर मार्ग प्रशस्त करता रहेगा। परिषद अध्यक्ष अनिल आर्य ने कुशल संचालन किया व राष्ट्रीय मंत्री प्रवीण आर्य ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

इन्द्रप्रस्थ विस्तार में भजन संध्या सम्पन्न

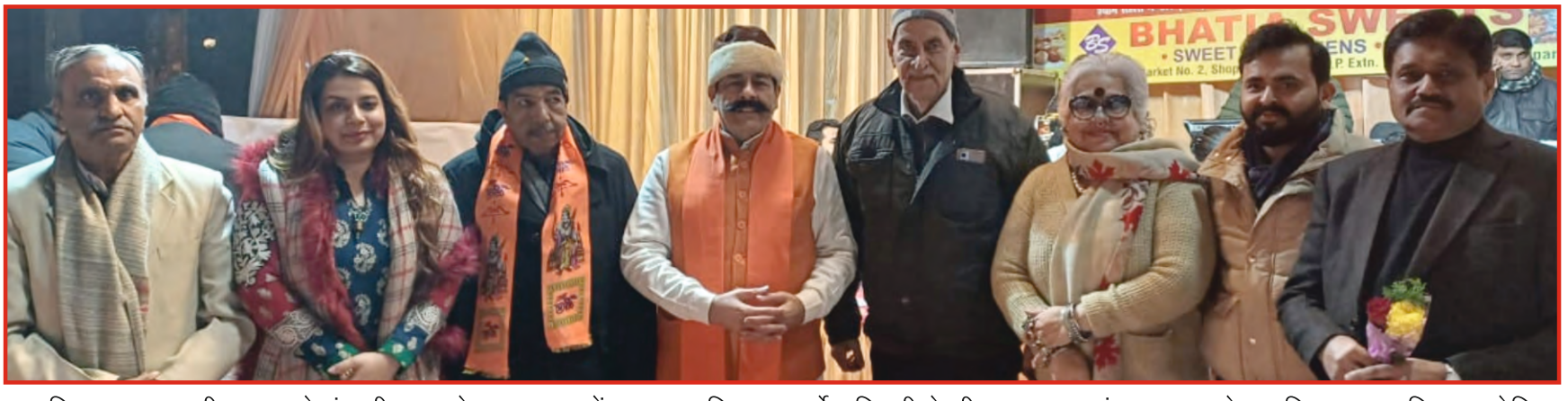

रविवार 21 जनवरी 2024 को पंजाबी सभा के तत्वावधान में इन्द्रप्रस्थ विस्तार मार्केट दिल्ली मे श्री राम भजन संध्या का आयोजन किया गया। विकास गोगिया ने कुशल संचालन किया गया। प्रमुख रूप से अनिल आर्य, पवन शर्मा, यशोवीर आर्य, जोगिन्द्र चुघ, पिंकी आर्या, मोहन चांदना, आस्था आर्या उपस्थित थे।

सम्पादक: **अनिल कुमार आर्य** द्वारा केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के लिए **मंयक प्रिंटर्स**, 2199/63, नाईवाला, करोलबाग, दिल्ली-5 दूरभाष : 41548503 **मो.** : 9810580474 से मुद्रित व परिषद् कार्यालय आर्य समाज टी-176-177, कबीर बस्ती, दिल्ली-7 से प्रकाशित, **प्रबन्धक** : दिनेश आर्य, मोबाइल : 9911587765, देवेन्द्र भगत, मोबाइल : 09958889970